International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'' स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में अपराध के प्रति जागरूकता का अध्ययन ''

विनोद कुमार यादव
(शोधछात्र)
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तावना–

वर्तमान भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था विद्यमान है जिसमें अपराध एक प्रमुख समस्या है जो कि सम्पूर्ण विश्व के लिए समस्या बन चुका है। शिक्षा से लेकर रोजगार तक आर्थिक से लेकर सामाजिक तक हर तरफ अपराध का ही बोलबाला है। राजनेता के काले कारनामों से राजनीति एवं पुलिस वालों के अपराध से खाकी इतनी दागदार हो गई है कि युवाओं एवं अन्य लोगों का नेता एवं पुलिस वालों से विश्वास टूट चुका है। वर्तमान समय में ऐसी स्थिति हो गई है कि अपराध होते हुए देखने पर भी लोग आवाज उठाने के लिए तैयार नहीं है।

आधुनिक समय में अपराध मकड़ी के ताने–बाने की तरह फैला हुआ है। यह मात्र एक दुर्घटना के रूप में घटित नहीं होता अपुति एक सोची–समझी योजना का परिणाम होता है। अपराध की गम्भीरता उसकी प्रकृति और उसका प्रकार, ये सब समाज की स्थितियों के अनुरूप होते है। अच्छे व्यक्ति जो अपराधी को एक अच्छा नागरिक बनाना चाहते हैं, पुलिस शक्ति को जो पुनर्गठित देखना चाहते हैं, अपराध न्याय में जो तत्परता चाहते हैं, पुलिस शक्ति को जो पुनर्गठित देखना एवं जो लोग वन्दी गृहों में सुधार की कामना करते है, अपने लक्ष्य पर विलम्ब से गलत निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। अपराध की कहानी तो बहुत पहले से ही प्रारम्भ हो चुकी होती है और यह कहानी एसी वातावरण में प्रारम्भ होती है जिसमें रहकर अपराधी का विकास होता है। इस सम्बन्ध में अपराधिकता के विनिश्चय के निमित विधि–विशेषज्ञों और समाज शास्त्रियों नें अपने–अपने ढंग से अपराध को परिभाषित किया है।

एडमण्ड वर्क के शब्दों में– ''सामान्य रूप से भ्रष्ट एवं आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों में आजादी का अस्तित्व अधिक समय तक कायम नहीं रह सकता है।'' उपरोक्त कथन बहुत ही प्रभवी ढ़ंग से अपराध एवं भ्रष्टाचार की द्यातकता एवं दुष्परिणामों को उजागर करता है। भारत में अपराध एवं भ्रष्टाचार की समस्या न सिर्फ भयावह है अपुति यह आम जन–जीवान में पूर्ण रूप से शामिल हो चुका है एवं इससे लड़ने की पर्याप्त इच्छा शक्ति भी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हमारे अन्दर नहीं है। मनुष्य के जन्म के साथ अनेक गुणों का विकास हुआ तथा वह अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अच्छाई से बुराई तक का रास्ता अपनाता है। सत्य से झूठ को अधिक महत्व देने लगता है इसलिए शिक्षा ही मात्र एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा अपराध को मिटाया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही मानव के आपराधिक प्रवृत्ति, लालची प्रवृत्ति एवं भ्रष्ट आदतों को समाप्त किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

इस विषय पर अध्ययन करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थी युवा अवस्था में होते है। इनके अन्दर एक प्रकार का जोश होता है जो वह किसी भी नैतिक–अनैतिक, समाजिक–आसामाजिक, सत्य–असत्य आदि कार्यों को करने में पीछे नहीं हटते है। इस स्तर के विद्यार्थियों में अपना निर्णय लेने की क्षमता होती है। अतः आधुनिक समय में हो रहे अपराध के प्रति युवाओं की जागरूकता को जानना एवं उनको सही दिशा निर्देष देने एवं समाज से अपराध को कम करने के लिए शोधकर्ता द्वारा इस विषय का चुनाव किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. शहरी क्षेत्र के छात्रों में बढ़ते अपराध के प्रति जागरूकता का पता लगाना।
2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में बढ़ते अपराध के प्रति जागरूकता को जानना।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अपराध के प्रतिजा गरूकता का पता लगाना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं–

1. शहरी क्षेत्र के छात्र बढ़ते अपराध के प्रति जागरूक हैं।
2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्र बढ़ते अपराध के प्रति जागरूक हैं।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अपराध के प्रति जागरूकता में सार्थक संबंध नही है।

न्यादर्श का क्षेत्र–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

न्यादर्श चयन हेतु शोधकर्ता द्वारा क्षेत्र के रूप में उत्तर–प्रदेश के मऊ जनपद का चयन किया गया।

न्यादर्श का चयन–

प्रस्तुत शोध–पत्र हेतु शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक बिधि द्वारा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं का चुनाव किया गया। न्यादर्श हेतु कुल 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है जिससे कुल 30 संयोजित प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों में अपराधके प्रति जागरूकता को जाननें का प्रयास किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेशण–

शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली में शहरी क्षेत्र केविद्यार्थियों द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तरों का आकलन किया गया।शहरी क्षेत्र केछात्रों द्वारा प्रश्न क्रमांक 6,7,8,26 एवं 28 को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के उत्तर पर सहमति का प्रतिशत 65 से अधिक है।अतः यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के छात्रअपराध के प्रति जागरूक है जिससे परिकल्पना क्रमांक 01 शहरी क्षेत्र के छात्र अपराधके प्रति जागरूक हैं कि पुष्टि होती है।

उसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तरों का आकलन किया गया जिसमें पाया गया कि प्रश्न क्रमांक 6,8,19,25,27 एवं 29 को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के उत्तर पर सहमति का प्रतिशत 60 से अधिक है।अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र भीबढ़ते अपराध के प्रति जागरूक हैं। जिससे परिकल्पना क्रमांक 02 ग्रामीण क्षेत्र के छात्रबढ़ते अपराध के प्रति जागरूक हैं कि पुष्टि होती है।

तालिका क्रमांक 1.1

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र विद्यार्थियों में अपराध के प्रति जागरूकता संमबन्धित परिणामों का विश्लेषण–

वर्ग	N	मध्यमान	मनक	स्वतंत्रता	मानक	क्रान्तिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 6 Issue 6, June 2016,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

			विचलन	कोटि	त्रुटि	मान t
शहरी छात्र	40	20.137	1.70	78	0.160	0.199
ग्रमीण छात्र	40	20.150	1.88			

शोध अध्ययन में एकत्रित आकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर एवं उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ज्ञात किया गया t –रेशिया मान 0.199 स्वतंत्रता के अंश पर सार्थकता के 0.05 स्तर के सारणीयन मान 1.984 से कम है अतः यह सार्थक है। अत हमारी परिकल्पना क्रमांक 03 शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अपराध के प्रति जागरूकता में सार्थक संबंध नही है कि स्वीकृति होति है।

निष्कर्ष–

शोध अध्ययन में यह पाया गया कि स्नातक स्तर के विद्यार्थी अपराध के प्रति जागरूक हैं। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अपराध एवं भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता बढाने का प्रमुख श्रेय आधुनिक जनसंचार माध्यम एवं पत्र–पत्रिकाओं का है जिससे छात्र अपराध के विभिन्न क्षेत्रों से परिचित होते हैं एवं दिन–प्रतिदिन होने वाली घटनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं।परन्तु ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा जागरूकता का स्तर कम है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी दैनिक समाचार पत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं का अभाव है।

सुझाव–

- ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालायों में दैनिक समाचार पत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं की उपलब्धता अनिवार्य रूपसे की जाय।
- महाविद्यालायों में समय–समय पर अपराध के विभिन्न पहलुओं पर विचार संगोष्ठि एवं वाद–विवाद जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाय।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- आर0ए0 शर्मा, शिक्षा अनुसन्धान के मूलतत्व, सूर्या पब्लिकेशन–मेरठ।
- डी0 एन0 श्रीवास्तव,अनुसन्धान विधियाँ,साहित्य प्रकाशन–आगरा।
- डी0 एस0 बघेल,अपराध शास्त्र,विवेक प्रकाशन–नईदिल्ली।
- मुरलीधर चतुर्वेदी,अपराध शास्त्र एवं दण्ड शास्त्र,इलाहाबाद लॉ एजेन्सी पब्लिकेशन–इलाहाबाद।